ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्   विषय- हिन्दी

दिनांक—06/07/2020   **चंद्र गहना से लौटती बेर**

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों,

शुभ प्रभात!

आपका दिन मंगलमय हो!

प्यारे छात्रों!उम्मीद है, आप इस विषम
परिस्थितियों में भी अपनी पढ़ाई अच्छी तरह से

कर रहे होंगे।जो अध्ययन सामग्री में दिया जा रहा है, आप उसे पूरा कर रहे होंगे।

कुछ अपनी बातें

मानव शरीर धारण करने की सार्थकता दूसरों के लिए जीने में है। पशु -पक्षी केवल अपने लिए जीते हैं। यदि मनुष्य पशु से कुछ ऊपर है तो इसलिए की वह केवल अपने लिए नहीं जीता। जिस देश और समाज ने उसे जन्म दिया है, उसके प्रति उसका कुछ कर्तव्य होता है। आप अपने कर्तव्य को समझें और अपना कर्तव्य निर्वहन हमेशा करते रहें।

अब आते हैं हम अपने आज के अध्ययन सामग्री पर ।

आप अभी केदारनाथ अग्रवाल की कविता 'चंद्र गहना से लौटती बेर' का पठन-पाठन कर रहे हैं।

चंद्र गहना से लौटती बेर

--केदारनाथ अग्रवाल

औ' यहीं से-

भूमि ऊंची है जहाँ से-

रेल की पटरी गई है।

ट्रेन का टाइम नहीं है।

मैं यहाँ स्वच्छंद हूँ,

जाना नहीं है।

चित्रकूट की अनगढ़ चौड़ी

कम ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ

दूर दिशाओं तक फैली हैं।

बाँझ भूमि पर

इधर-उधर रीवा के पेड़

काँटेदार कुरूप खड़े हैं।

क्रमशः

छात्र कार्य-

- कविता को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
- कविता का शुद्ध-शुद्ध वाचन करें।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी "कुसुम"